

श्री चण्डेश्वर श्री स्वामि श्री कृष्ण श्री हनुमान् श्री गुरुदेव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री गुरुदेव

2068

I

सायनाम्नो ॥ श्री गुरुदेव ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

345
stotra
Linda

सप

स्यत्र १३
स्यत्र

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ पत्राधिपतुस्तु सिपरमपवित्रम् ॥
देवैः सदा मुनिगणैरपि विंशताये ॥ १ ॥ पापविनस्तु सहस्र
भवदर्शनेन ॥ तस्यैरामस्तु सततं तु सिरताये ॥ २ ॥

सायनाम्नी ॥

स्यत्र १३

345
stotra
Linda

ॐ नमो श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीसरस्वतीदेवि नमो ॥ ॥ श्रीश्रीश्री
स्वस्थानि परमेश्वराय नमो ॥ ॥ श्रीश्रीश्री ॥ ॥ नमस्तुते माहादे
वि सत्त्वा नापापहारनित्रे लोके जगन्नित्रयेः स्वस्थानि पर
मेश्वरिः सिद्ध आसनं माहारुद्र ॥ अग्निकेतकधारमिः उप
त्यारमयहस्ती चः वंदितां सुवर्नेश्वरि ॥ १ ॥ हेमवनवि
चित्रानि तेन्यत्र कमलानमः ॥ पद्म आसनं धिता लक्ष्मिवं

दितां गिरिकेश्वरि ॥ २ ॥ चतुर्भुजां माहादेवि जगत्पुमजी
ना ॥ दक्षिण्य वदपानि नंदिता सिद्धिनेश्वरि ॥ ३ ॥ सर्व अरं
कारं भूषां गि सर्वभूषां नृगुणतः सर्वसिद्धिप्रदा देवी सांदितां
सर्वमंगलां रुद्रप्रियती मानीत्यं ॥ ४ ॥ रुद्रगं स्थितैर्वैः परमा
लुप्तिता मुल्यं वंदीतां श्रुतीकेश्वरी ॥ जगदुखायाहारी च ल
क्ष्मि संप्रदायनी ॥ ५ ॥ उपवध्यस्तुः तीमानीतें पुत्रपुत्रो
दी रुजय ॥ ६ ॥ इति श्रीस्वस्थानीयमेश्वरी जगत्सुखाय नमो
समाप्तं

श्री

शुचितभूतिधरः भगवत्भाववत्वावित्तनिर्दमिदं ॥ प्रयचित्त
समाहितं च करः तव नोमिसरश्रुतिपारजुगं ॥ ६ ॥ मति
हिनजलामघपासमिसकलागमभाभिर्पदमिदं ॥ प
रिपुरितवीस्वमनेकरथः तव नोमिसरश्रुतिपारजुगं ॥
७ ॥ परिपुनमशोहरपादमिदं ॥ प्रमाथविचारमनेक
शरणो विरमे बविलसमिदं
रथः तव नोमिसरश्रुतिपारजुगं ॥ ८ ॥ इमस्तव महति

व्यं ब्रह्मनापरिक्लिप्तः यपथेप्रातरुथाय त्रिसंधाव
जपेन ॥ ९ ॥ जपथेविधिधावापि नृस्यकं ये ॥ स
रस्रुति ॥ इति श्रीब्रह्मप्रोक्तं व्यासभाषितं सरस्वत्या
स्तवसमापतं ॥ सुभ ॥ ॥ श्रीगनेसाय नमो ॥ ॐ नमो
भगवतवासुदेवाय ॥ नम नम ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ विष्णु
पजलकदिव्ये सर्वदुस्त्रनिवारणे ॥ इति प्रज्ञेमाहाविज्ञेसि

वसिष्ठुनि कीर्तनं ॥१॥ त्रिपुरं दहे प्रान्य न ब्रह्म नाहं स्वयं कि
तं ॥ तदहं सर्वं पूर्वाभा मि आनमार ॥ सदा भवेत् ॥२॥ पांशे
रहे तु गोविन्द जंगयस्तु त्रिविक्रमं ॥ उरु र्ग्या के सवो
रक्षक त्या चैवो जना दर्शनं ॥३॥ ना भवस्तु अचिंतो र
हे गृहे स्तुवा मनसा तथा ॥ उदरे पदसु ना भव हरिपु
रं चरहेत् ॥४॥ वामपास्ये नतो विष्णु दक्षिणे मद्गुर

नं ॥ बाहु दो वासुदेवस्व हिदयस्व जनार्दनं ॥५॥ कथे
रहे तु वाराह कृष्णस्व मधुमं दले ॥ माधवो कनयो
रहे रिषी के स्व चनासिके ॥६॥ नेत्रो नारायणो रहे
ललाते गरुध धोज ॥ कपोले ये सवो रहे वेन तेजो धे
जपु म् ॥७॥ श्रीवत्सवर्गा त्रेषुरक्षि मे पुरुषोत्तम ॥ पुरु
वेषु प्रहरिका हे आ ग्रीया श्रीधरस्तथा ॥८॥ दक्षिणे

श्री

नारसिंहस्वनेरितेनुदामोदर॥१०॥प्रह्वोतप्रसुवारुव्या
वारुव्यापितवासक॥११॥गराधरसुकोवेरैसंभ्रमि
सानेनोदसि॥पातालेषुगदरहेआकासेषुसुदरस
न॥१०॥समिधौसवगिनेषुप्रविष्टविष्टुपजल॥
विष्टुपजलविस्वहविचरामेगहेस्वरि॥११॥राजद्वारेपथे
चोरेसंग्रामेसत्रुसंकते॥नदिष्टुतरस्समेवव्याघ्रवौ

रभयेसथा॥१२॥अग्निदग्धनिपात्रेषुश्रुतग्रिहनिवार
नैद्यकिनिश्रुतप्रेत्यषुभयनासिकरात्रन॥१३॥रंछेर
हेमहादेवरंछेरहेमहेस्वर॥रंछेरुसवदेवानांब्रह्मवि
ष्टुमहेस्वर॥१४॥दिवारंछेरुशुद्धिमाशत्रोरंछेरुचंद्र
मा॥सद्योवरंछेरुविष्टुनासर्वधानेजानादनी॥१५॥जल्य
रंछेरुवारहपलेरंछेरुवामनी॥अथश्रीनारसिंहस्वसर्व

ॐ
नापति सुंधरं ॥ काकुलं करुणा करुण निधिविपु प्रयोध
निक ॥ १ ॥ राजी नंद सते मध्ये दसरथत नये मा प्रल साति
मति वंदे रोकाधिरामं रघुवरतिलकं वंदे सारिवरारि ॥ २ ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ अखं सधु लतरं गजिंद वरनरं
वोदरे सुंधरं ॥ प्रसवे दं मधगा धल बध व्या लोक दंद
संध लंद नाद्यात विराजितारि वनि तसी धुर स्वभाकरं
॥ १ ॥ स्वस्ति श्री सर्वोपमा जो ग्यत्पादि सकल गुरागुरी राड

वंदे से लुसुता सुतंग नपति सिधि प्रदं कर मसु ॥ ३ ॥ जं वं
मवे दंत वरो विरंति पुरं पुराणे पुरुष सतर्तने ॥ २ ॥ वि
स्वव गते कार न विस्व वा यो न स्त्री न मो विग न विना
य का गो ॥ ३ ॥ सुमं ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ मेरु
कं च न दत्वा नां गवां कोति सतिरतिपं च कोति लुल
गानां तत्फलं सिव दूर सतां ॥ १ ॥ सुभ ॥ ॥
स्वस्ति श्री सर्वोपमा जो ग्यत्पादि

ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ नमः शिवाय ॥ ॥ केलाशस्यो भूरे
इष्टं भूम्भुठस्मृदिकलत्रिने ॥ तस्यो गुरुवदिते नृजला
नृत्तुर्विवर्जिते ॥ ॥ तर्कधर्मपदाधारैः सर्वज्ञः
तल्लयः ॥ कृताश्रुलियुतो भूत्वा सुखातिनिदाशिवः
२ ॥ ॥ प्रपद्यता तो भूत्वा नातुभ्यां सवति भूता ॥ प्रहर्ष
भावः ॥ ॥ केतयाय न देवेश चीतुयुतो मशो भवेद् ॥

३ ॥ ॥ तन्मे प्रहृष्टं देवं लोका नंदित्वा मिया ॥ ॥ श्री सदा
शिव उवाच ॥ इष्टं नृपुत्रं युवनामिचित्तयुग्मं नित्यं
॥ ५ ॥ ॥ तं तात कर्मसाधनं वायि मत्तु विवर्जितं ॥ तः
स्मिन्नेकं सुविद्यो ह्येव शिलो यपरिपुत्रः ॥ ५ ॥ कृता नः
भयं नृपुत्रं प्रहृष्टं नृपुत्रं यशिवः ॥ तस्य तं किं भूतं
नित्यं मुनिना नृत्तुलजितं ॥ ६ ॥ ॥ तन्मेव कितयं वृत्तं

ॐ जे तु न स शय ॥ हित कार सा लो कानां वे लो कं स च रा च रं ॥
७ ॥ न मो दे वा यि दे व द्रा ल व ज्ञा न भू ता म्बर ॥ ८ ॥ प्रा णि ना म
पि ना भ त्त्व म् त्पु जय न म त्तु ते ॥ ९ ॥ दे हि ना जि व भू तो
सि जि वो जि व स्य रा ॥ १० ॥ न ग त र द क त्त्व हि म् त्पु य य नः
म त्तु ते ॥ ११ ॥ हि मा द्रि शि व रो भा तं त्पु वा वि चि लो द्द राः
॥ १२ ॥ पु त्र रि क क लो भा सः म त्पु जय न म त्तु ते ॥ १३ ॥ ना ग

हा ल म हा प्रा ज्ञ सर्व ज्ञा ने क कार न ॥ १४ ॥ प रि त्रा ता तिलो
का नां म त्पु जय न म त्तु ते ॥ १५ ॥ ति हि ता य च का रे न स
दे वा तु र मा नु षा ॥ १६ ॥ ग न्ध र्वा ष्ट र स इ ने व ति थि वि
द्या ध्या रा त्ता ॥ १७ ॥ सा ध्या इ च व स वो रु द्रा स्त था सि वि
म ला वृ षो ॥ १८ ॥ मा रु ता इ च दि त्वा ना गा स्त वा ते न मा त्ता था
॥ १९ ॥ जि तां ते वि त्त वं ध्या ना म त्पु जय न म त्तु ते ॥ २० ॥

श्री

यथाय किं परा मुर्धियुजय नि नरा दय ॥ तेन प्रपु
वसया निमृत्युजय नमस्तु ते ॥ १५ ॥ तमु मो कारो दि
देवा नां देवो ना इव द्वा दा दिव ॥ आचार इति इति
किनां मृत्युजय नमस्तु ते ॥ १६ ॥ सा वरं जंगमे वापि
याव कि ल कि दे दिनं जिवति त्या ह जो दो यं मृत्युज

य नमस्तु ते ॥ १७ ॥ सोम सुजा गित म क्य ल यो म व्या
पि स दा दिव ॥ कालत्रय महा कालः मृत्युजय नम
स्तु ते ॥ १८ ॥ प्रवृद्धे दो प्रवृद्धे च त्वं जल जति प्र मो ॥ स
ति ह ये न देवा म मृत्युजय नमस्तु ते ॥ १९ ॥ यो म सत्य यो म
रु यो सित ते ज ॥ सर्व व ते जति ॥ ज्ञानि ना ज्ञान ह यो सित म

ॐ

सुंजय नमस्तुते ॥२०॥ जगज्जिबो न न्या शाः सति त्व
जगतां सुभ्रु ॥२१॥ कारन तवति धा नाः सत्यं जय न
मस्तुते ॥२२॥ तेजतो मिन्द्रि या नाव सव ज्ञान प्रवो ध
क ॥२३॥ साख्य योग इव हं त इव सत्यं जय नमस्तुते ॥२४॥
ह्याति तं च रूपं च पि रा स्य द मे व चा च त् योग क ॥

लाध्याल सत्तु जय नमस्तुते ॥२५॥ नेच के वं हि ह पोः
सिः सो मरु पो ति स्र य के ॥ कु म्भ के सि व ह पो ति स्र य
जय नमस्तुते ॥२६॥ न य करो सि याः पा नां पु न्या ना
च वि व धु नं ॥ त्व हे तु ॥ यो य शा ति त्वाः सत्यं जय नम
स्तुते ॥२७॥ त्वं प्रवो धु त्व मा ध्या रः त्वं मे वि जं तु वने
त्र य ॥ सत्यं र जता मे वा त्रः सत्यं जय नमस्तुते ॥२८॥ त्वं त्व

मस्तुंदिनेशश्च त्वं मा त्मा प्रकृतिपरा ॥ मस्तुंदिनेशश्च त्वं मा त्मा प्रकृतिपरा ॥
 धर्मस्तु जय नमस्तु ते ॥ २७ ॥ सर्वं दिव्य गंगा धार ॥ सः
 वस्तु नगु रा भय ॥ २८ ॥ सर्वं ज्ञान मया नमस्तु जय नम
 त्ते ॥ २९ ॥ त्वं मो त्मा सर्वं प्रकृते त्वं गुणा रा म धि त्व रः
 सर्वं निरु मया धार ॥ मस्तु जय नमस्तु ते ॥ ३० ॥ त्वं य ह स
 र्वं यज्ञा नां त्वं वृष्टि र्वा रक्ष तां ॥ ३१ ॥ सर्वं वृक्ष त्व मे वा न

मस्तु जय नमस्तु ते ॥ ३० ॥ सर्वं प्रा या कला धारं ॥ सर्वं दिव्य
 परा यर ॥ सर्वं दिव्य गुणा धि दाः मस्तु जय नमस्तु ते ॥ ३१ ॥
 हय गन्ध त्मा स्य दा ॥ सर्वं स त्कार य वच ॥ वस्तु ॥ यु का
 र मे ते वाः मस्तु जय नमस्तु ते ॥ ३२ ॥ वस्तु वि धा ना ति ना
 हे तु ॥ त्वं कार तो त्व र भु वा ना व परि धि त्र मस्तु जय नम
 त्ते ॥ ३३ ॥ त्वं स ना दि न न त्व त्रि त्मा ति त्व वि भा व न ॥ ३४

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ कृष्णवन्द्यवानि विश्व
प्रजितविश्वपावनि पुष्पसागनदि निवनल
मिहस्य जि। वनि यन्न न नामास्तक्यैव सात्र
नामार्थकयुः यपेठतारिष पुन्यग्राश्च धफलं
लभेत् ॥ १ ॥ इति श्रीगुरुस्तोत्रमपुनः ॥ शुभम्

म. व्याख्याता स्वस्ति श्री ज्योत्पासलगादि
स्वस्ति. सर्वोपमा ग्यदि जगताम् ॥ ४ ॥

२१०

किं त्वमेव देवेदाः नृत्य जय नमस्तुते ॥ ३४ ॥ त्वमेकोतिः
छलोः देवः कारः नृत्य जय नमस्तुते ॥ ३५ ॥ अति सु ज्योति हय त्वं मः
नृत्य जय नमस्तुते ॥ ३६ ॥ अक्रा व्यक्र त्व ह पे न व्या फ विस्व
मन त कं ॥ वित्वा त्मा वित्वा हय त्वं मृत्यु जय नमस्तुते ॥
३७ ॥ चं हिन परमा विद्याः त्वहि न परमा गति ॥ चं हिन का

श्री गुरु गुरु गुरु गुरु
ASHA ARCHIVES

2068

I

रनं कर्म नृत्य जय नमस्तुते ॥ ३८ ॥ कुंदा दिना नृ दत्ताः
त्वं कल लोक स्य त वन ॥ भुक्ति मुक्ति वर दाना नृत्य जय न
मस्तुते ॥ ३९ ॥ प्रकृते रादि पृ हष त्वमि वय र म दि व ॥
सदा धार पुजा के नृत्य जय नमस्तुते ॥ ४० ॥ एवं संकी
र्तय दे त्वं ॥ प्रयत्न मा न स ॥ न क्य दत्तो तिये वृत्त

ॐ

ब्रह्मसुवदा गो ज वेत् ॥४०॥ नापमसुवदायाति यः
क्रकारं च लंघयत् ॥ व्याधयो रोपय येनै नोयसगभिः
संज वेत् ॥४१॥ सुभ्यासं रेतरे काले दाने कावदुर्नेह
ते ॥ मत्पुं न जायते तस्य रोग लंघयिषु चेति मत्पुं न य
न प्रसक्तं ॥४२॥ पचु म्यां च दस म्यां च यो र्गु मा स्यां च

~~विनाशो र्गु मा स्यां च~~

॥४३॥

थापि वा ॥ इत मावदु ये लु सतवर्षं तजि वति ॥ इदं
रहस्य परमं देव देवस्य योगिनः दुस्वप्न नासतं पु
न्यस्य हरिस्त विना सतन ॥४४॥ सुस्वप्न वधुर्न नित्यं स
र्वदुः ॥ कल स रा ॥ सर्वपाप विनिमूढः शिवलाये मः
दि यते ॥४५॥ सतवर्षं च तजि वति पुत्रपौत्र पुत्तिकी ता

॥ ददु मे ददु म विप्रु लो सुदु मे ददु म पो रका ॥ ५५ ॥
 मे लुज य प्रज प्रे न स म लो द रे न न ॥ स य न न क न
 सु चै ने न न द श द श य ॥ ५६ ॥ इति पार मे र न न न
 च त्रु टा मि ति ॥ सा ह भु के न लु ज य लो न स मा क
 सु य म सु य म दो व न दि य ते ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमो ॥ पांडुवाच ॥ प्रह्लादनाहदपरा सरपुंद
 रिष्वासांवरिक सुकसौ न क भीष्मका द्या ॥ रुक्मीगदाश्र
 जुन वसिष्ठा विभीषणा द्याः यता न हं प म भा ग व त न मा म
 मि ॥ १ ॥ लोमहर्षि रवाच ॥ धर्मो विवदुति कुबिचि
 कृतगोनः पाप प्रने स्पे तु व के द र कृतगोन ॥ स कु वि
 न ले ति ध न ज य कृतने नः मादि सु तो कं ठ य ता

श्री

न भवति रे गा ॥ २ ॥ वस्त्रो वाच ॥ ना ये मानवा विक्र
राग परा परांशः नारायणं मुरं गुरुं सततं समरंति ॥ ध्या
नेन तेन हत किं न विषये द नास्ते मातु पर्याधरं
स नं पुत्रपिवंति ॥ ३ ॥ इन्द्रो वाच ॥ राग राय नो ना
म नरो नराणां प्रसिधौ ह कठित प्रठिक्ता ॥

अनेक जन मजित पाप सं च यत्तः हरत्यस्य च सुमृत
मातु के सर्व ॥ ४ ॥ बुद्धीस्ति र्दुवाच ॥ मेघ स्यात्त पित को से
यदा स श्री वत्सां को सुयोग भावु सि तां गं ॥ पुन्या त प्रा
पु राद रिक्ता य तां दे विष्णु वंदे सर्व लोके क ता पं ॥ ५ ॥ श्री म
त्य नै दुवा च ॥ न ली च म ज्ञा स च श च धा वि या न को न्य
विल विस्व मुनि ता ॥ समे सो ये शुभ ग धा न प्रसि ध तु

श्री

श्री

॥६॥ अजु नवा च ॥ अचिंत मय न न न म य मो विभु
प्रभु वा वित विसो भाव न ॥ त्रै लोके विसार विचो क्त
हरि पवनो मुमु गतिं प्रा हा त ना ॥ १ ॥ नकु लो की चं
॥ धा द ग म न म ध स्ता क म प्र सा न भु धाः यदि च कु
ल वि हि नो जा य त प दे कि ॥ कि न्न स न म पि ग त्मा ध्या म
तै चारो म्माः म न भु व त रि धि स्ता के स वे भ ग ति रे का
॥ स ह दे व वा च ॥ त से ज शं व रा ह स्ते वि छ र नु लु ते

जा

श्रीगणेशाय नमः ॥ इति नमामि विष्णुं जगदेष्टाम् ॥
 त्वये वभक्तिं चला व्याप्ति चारिणि ॥ १२ ॥ श्रीनमो वाच
 यकोपि कृष्णस्य कृष्णप्रणमा दुस्तु श्वमेधाव्रवि
 ष्यत्तु त्वां दस्ता श्वमेधि पूजो विजयः ॥ कृष्णप्रणमं
 मिनपूरा भवोया ॥ १३ ॥ श्रीमि मन्त्र वाच ॥ गोवि
 न्दगोविन्दो गोविन्द गोविन्द मन्त्र नृकृष्ण
 गोविन्द वागपाने गोविन्द गोविन्द नमो मिनि
 नमः ॥ १४ ॥ चक्षुः स्रुवाच ॥ श्रीम नारायण वा श्व

[illegible]

सनचदिवाचरात्रौ कथं वा चिग्रहं तौ ॥ यदस्ति किं
वीर्यं कृतकृतमप्राजनादिनस्तेन तस्य तू ॥ १८ ॥
सजये उवाच ॥ आवा विषस्मासि ठिवा अभिताद्ये
रष्ट्रं च द्रिष्टुं वर्तमाना ॥ सकृत्प्रनारायणसदमात्रा
विमुक्तदुःखासूखिनो भवति ॥ १९ ॥ ॥ अकार उवाच ॥
अहं हि नारायणदासदासदासस्य दासस्य च दास
दास ॥ ॥ पुन्येन मिश्रे जगत्तो नराणां तस्मादहं च

न्यतरास्मि लोके ॥ २० ॥ विदुर उवाच ॥ वा शूदेवस्य य
भक्तास्तत्तदुत्तमाना ॥ ते आदासस्य दास्यहं भव्यज्ज
मनि जन्म निजन्म नि ॥ २१ ॥ ॥ अयम उवाच ॥ विपरि
वृत्तकालेनूपरिधिरो व वधूनां हि मोक्षपया
कृष्णसरणागतवत्सला ॥ २२ ॥ दोषाणां चायम उवाच
ये ये हन्ता ॥ क्वचरेनैतया मि केन ठेन जना ॥
नेन ते ते गंगा विष्णु परिप्रयाता ॥ कोचोपि देह

वस्य लोचनं ॥ २३ ॥ कृपा चार्प्य उवाच ॥ मन्त्रं
मूलं मिदं मधुकैटभारमत्प्रार्थितं यमदन्त
ग्रहयमयव ॥ त्वद्वृत्त्यद्वृत्त्यपरिवारकं नृत्तं
त्यप्रतिमा स्मरन् लोकनाथ ॥ २४ ॥ अस्वस्थाम
उवाच ॥ गोविन्दकेसव जनार्दन वात्सल्यविवि
धैस्त्रिविधमधूदनवित्स्वरूपा ॥ श्रीपद्मनाभपू
रुषोन्नमपूरा नारायणचतुरारस्मिन्

मोक्षमस्ते ॥ २५ ॥ कल्पवृक्ष उवाच ॥ नान्यवदा
मितं शृजोमिन्नचिंयामि ॥ नान्यस्मरन् भक्तान्
नामिन्नचाश्रयामि ॥ भक्तावदियं चरणं स्तु
तमादरेण श्री श्री श्रीनिवासपूरुषोत्तमदेवदाता
॥ २६ ॥ चतुरार उवाच ॥ नमो नमो नमो नमो
येभ्यो यन्तोषेणायामितविक्रमामि श्रीशङ्खचक्र
सिङ्गध्वजराय ॥ नमो नमो नमो नमो पूरुषोत्तमाय
॥ २७ ॥

गाश्वाश्च वाचा ॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव ॥ त्वमे
 वंदुस्त्वस्य त्वमेव ॥ त्वमेव विदुर्गादि विन त्वमेव
 त्वमेव सर्वममिदेव देव ॥ २८ ॥ प्राप्य च उवाच ॥
 ये जस्य च त गोविंदं साधवानतः केसवा ॥ कृष्ण
 विष्णु ह किं केसवा सूर्यो नमस्तुते ॥ २९ ॥ जयद्र
 थ्यवाच ॥ नमः कृष्णाय देवायः प्रसन्नो नतमू
 र्तिने ॥ जागेस्व राय जाग मत्तु हस रगाय ॥ ३० ॥

उन्मो जाग य राय ॥ ॥ नमो विष्णु जागे कवभुः इष्ट
 दिदेवा चिंतपाधुर्गमीः श्रीवासुदेव हरिमादिदेवः नराय
 णानित्यमहं न जामि ॥ १ ॥ मनो मयं विस्वसृज विराजः यो
 गीन्द्रसिधेस्तस्य व्यमानं ॥ परात्परयत्परमं पवित्रं राय
 यन ॥ २ ॥ अचिन्मम व्यक्तमन्नतमूर्तिः मुनिन्द्रगुह्यं रिपु
 र्गमेक ॥ कलानिद्रिकल्पपनासेहतुं ॥ नारायण ॥ ३ ॥
 (असेषसंसारविकारहिं प्रगो वरं निर्मलमकरूपं ॥ स

द्वयं विविधं स्व रूप ॥ नारायण ॥ ४ ॥ नारायणस्य
तविहि न स कः सत्यं चिदा न न्य स यं सति च नाना वतारैः सुरम
नुषटैः ॥ नारायण ॥ नमो मधु चै स कर य नित्य ॥ नमो स्तु
ते व्या ल रि प्र वृ ज्ञा यो ॥ नारायण ॥ ६ ॥ सर्वत र स्थो मि नि
धरु यो गे र र यो गा वि धं नि रिहः प्र सि द त्त द स्मी न व प द्म
शिद्रु ॥ नारायण ॥ ७ ॥ नमो स्तु ये न न्द वि दार ण यः प्र सि द प
म मे ध न च क्र पा ने ॥ नमो मो द कि ह स्त ग द ध र्म ॥ नारायण नि

यमह भजा मि ॥ ८ ॥ नाना यो स ह स्ते यः जाय मान प्र न पु न
त्रा हि ना हि रे वि द्रो मो द हि कृ पा नि धो ॥ ९ ॥ य के च्छु न य
इ क्त्वा वि लो ना मा न कं स यो
प्री से मा गो सा ॥ १० ॥ प ज्ञा यि त्त नु रू ति
स्वा स्त श्री सर्व प मा जो यि त्त
मा स्ति सत्य व

उं नमः श्री गणेशाय ॥ ॥ गोपिका कुचुः ॥ जयति ते शक्तिं ज
मना वज्रः श्रयत इन्द्राशश्च दत्त हि ॥ दयित दृश्यतां दि
क्षता वकास्त्वयि भूता सर्वस्वा विविच्यते ॥ १ ॥ वज्रजना त्ति
हनवीरयोषितां निजजन समयध्वं मनस्मित ॥ भज सर्वेश नि
शां किं हूरीः स्मनो जल रुहाननं चारु दर्शय ॥ २ ॥ शरदुहाशये
सा वुजात मत सरसि जोदर श्री मुखादृशा ॥ सुरत नाथ ते शुक्ल
दासिका वरद निघ्नतो नेह सिंवधः ॥ ३ ॥ विषजला घृया त्रया त

राक्षसा हर्षमारुतां दैद्युतान् लात ॥ वयमयात्मजा द्विभ्रतो भ
यादृष्य भते वयसि ता मुहुः ॥ ४ ॥ नखलु गोपिका नन्दनो नृवा
नखिल देहिना मन्त्रात्मक ॥ विषनसा शक्तिं विश्वगुप्सये
सर्व उदेयि वानसा त्वतां कुले ॥ ५ ॥ विरचिता भयं वृद्धिधू
र्यते चरण मीयुषां संसृजे भयात् ॥ करसरोरुहं कान्तका
मदं सिंहासि धीहिनः श्री करग्रहं ॥ ६ ॥ पुणत देहिनां पाय
कषणं तृणवरा नुगं श्री निवेतनम् ॥ फणि फणा प्यितं ते

कतागचरचहजंरु